HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
SATURDAY, OCTOBER 26, 2013

'Harness tech to boost farm output'

HT Correspondent
lkoreportersdesk@hindustantimes.com

LUCKNOW: The three-day AgriFest and Kisan-Vigyan Sangam 2013 was inaugurated by Dr Rudra Pratap, director, animal husbandry, at the Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) on Friday.

Speaking on the occasion, Dr AK Sah, coordinator of the Kisan Vigyan Sangam and senior scientist at the IISR, referred to huge yield gaps in agriculture and the allied sectors. He said there was immense scope for productivity enhancement by harnessing the potential of available technology.

The National Agricultural Research System (NARS), comprising various research institutions under ICAR, the state agricultural universities (SAUs) and Krishi Vigyan Kendras (KVKs), are doing their bit for productivity improvement. The manufactures, input supply agencies and service providers may play a greater role in extending benefits of developed technology to farmers, he said.

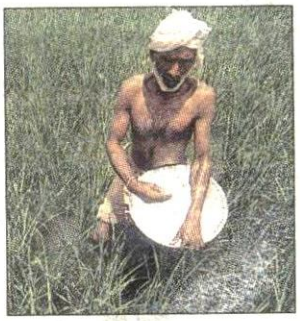

Agriculture was the main source of livelihood for two-thirds of UP's population, he said.

Dr Rudra Pratap suggested greater integration of animal husbandry with crop cultivation to improve the economic condition of farmers.

Statistics reveal the state has a significant bearing on the national economy, contributing more than 13 % of agricultural GDP of the country. The state is the largest producer of food grain and sugarcane in the country. It has a 26% share in the total horticultural production of the country.

UP ranks third in fruit production and first in potato production. It is the second largest producer of vegetables with a share of approximately 12.06% of the national production. Dr Sah said lack of marketing infrastructure, cold storage/ godown for storage of additional agricultural produce, unavailability of quality inputs in time were serious problems due to which farmers were not getting adequate income from their produce.

अमर उजाला | लखनऊ | शनिवार | 26 अक्तूबर 2013 | राजधानी

कम कृषि उत्पादन से पिछड़ रहा यूपी

लखनऊ (ब्यूरो)। यूपी का देश के कृषि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 13 प्रतिशत का योगदान है। यह तब है, जब सूबे की दो तिहाई जनसंख्या खेती पर निर्भर है। यूपी में सबसे अधिक फल एवं आलू उत्पादन होता है। सब्जी उत्पादन में इसका दूसरा स्थान है। इन सबके बाद भी कृषि उत्पादन की क्षमता यहां चिंता का विषय बन गई है। दूसरे राज्य हमसे बेहतर कर रहे हैं। प्रदेश में कृषि उत्पादन को बेहतर बनाने के लिए शुक्रवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) में तीन दिवसीय एग्री-फेस्ट तथा किसान-विज्ञान संगम-2013 की शुरुआत हुई। इसका उद्घाटन पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. रूद्र प्रताप ने किया।

डॉ. रूद्र ने कहा कि खेती के लिए जरूरी प्राकृतिक संसाधन जैसे- उपजाऊ जमीन, सिंचाई हेतु पानी, उपयुक्त जलवायु यहां मौजूद है। इसके बाद भी कम उत्पादकता चिंताजनक है। संयोजक डॉ. अजय कुमार शाह ने कहा कि प्रदेश में किसानों के बेहतर उत्पादन करने के बावजूद अपने उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो रही है। कृषि उत्पादों का असंतुलित विपणन, अधिक उत्पादन की स्थिति में अतिरिक्त उत्पादों को शीतगृह /गोदामों में भंडारण की कमी, कृषि निवेशों का सही गुणवत्ता का न होना, मूल्यों एवं समय पर उपलब्ध न होना बड़े कारण हैं। राज्य के समग्र कृषि-विकास में 'सदाबहार हरित क्रांति' की आवश्यकता हर स्तर पर महसूस की जा रही है। प्रदेश के विभिन्न जिलों से कृषि विभाग, कृषि शोध संस्थाओं, गन्ना विकास विभाग, कृषि निवेश निर्माताओं तथा चीनी मिलों के लगभग 500 अधिकारी, वैज्ञानिक और बड़ी संख्या में किसान हिस्सा ले रहे हैं।

एग्री-फेस्ट व किसान विज्ञान संगम-2013 के शुभारंभ समारोह में विशेषज्ञों ने जताई चिंता

मेंथा उपज बढ़ाने में कारगर ट्राइकोडर्मा

लखनऊ। शनिवार से सीमैप और एनबीआरआई में शुरू हो रही दो दिवसीय सेमिनार से पहले मेंथा की उपज कर रहे किसानों को ट्राइकोडर्मा की जानकारी दी गई। कार्यशाला में लखनऊ और बाराबंकी के गांवों के किसान शामिल हुए। परियोजना के पर्यवेक्षक डॉ. राकेश पांडे ने बताया कि ट्राइकोडर्मा हर्जियानम खास तरीके का सूक्ष्मजीवी कवक है। इसके उपयोग से रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल को भी काफी हद तक रोका जा सकता है। ट्राइकोडर्मा की जानकारी सीमैप द्वारा नये चयनित किसानों को 31 जनवरी को होने वाले किसान मेले में दी जाएगी। सीमैप के वैज्ञानिक डॉ. वीकेएस तोमर, डॉ. संजय कुमार, डॉ. सौदान सिंह, सुदीप टंडन, जमील अहमद, डॉ. राम सुरेश और डॉ. एके सिंह ने जानकारी दी।

लखनऊ में खुलेगी बीज प्रसंस्करण इकाई

लखनऊ। प्रदेश के किसान आधुनिक खेती के गुर सीखेंगे। बीजों की नई-नई किस्मों के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी। इसके लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग लखनऊ के बक्शी का तालाब में बीज प्रसंस्करण इकाई (सीड प्रोसेसिंग यूनिट) खोलने जा रहा है। इस केंद्र का शिलान्यास विभागीय मंत्री अभिषेक मिश्र करेंगे। इसमें बॉयोटेक नेटवर्किंग की सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इस केंद्र में किसानों वैज्ञानिक तरीके से खेती की नई विधा सिखाई जाएगी।

the pioneer
LUCKNOW | SATURDAY | OCTOBER 26, 2013

3-day 'Agri-Fest' kicks off

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

A three-day Agri-Fest and 'Kisan-Vigyan Sangam 2013' began at Indian Institute of Sugarcane Research on Friday. The fest is being organised by a private company in collaboration with IISR, Lucknow. The event was inaugurated by director of Animal Husbandry, UP, Rudra Pratap.

Coordinator of Sangam and senior scientist at IISR, AK Sah highlighted the importance of the programme to dignitaries and visitors. He said that agriculture was the main source of livelihood for the two-third population of Uttar Pradesh. With the huge yield gaps in the areas of agriculture and allied sectors, there was an immense scope for productivity enhancement by harnessing the potential of available technologies, he said.

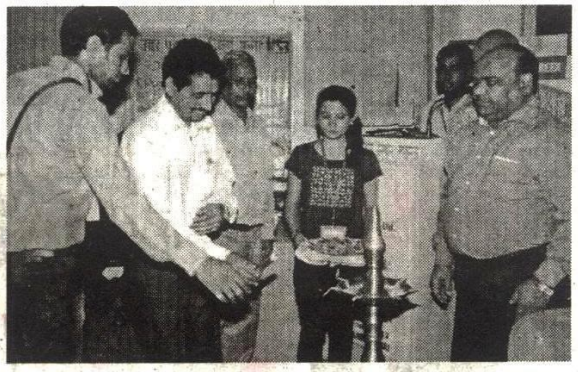

"National Agricultural Research System (NARS) comprising various research institutions under ICAR, State Agricultural Universities (SAUs) and Krishi Vigyan Kendras (KVKs) are doing their bit for productivity improvement. The manufactures, input supply agencies and service providers may play a greater role in extending benefits of developed technology to farmers," he added.

Rudra Pratap said that economic condition of farmers might be strengthened by integrating animal husbandry with crop cultivation in a bigger and larger way.

The organisers said that UP had a significant bearing on the national economy contributing more than 13 per cent of the agricultural GDP of the country. UP is the largest producer of food grain and sugarcane in the country. It has a 26 per cent share in the total horticultural production of the country. UP ranks third in fruit production and first in potato production. It is the second largest producer of vegetables with a share of approximately 12.06 per cent of the national production.

Sah said that lack of marketing infrastructure, cold storages, godowns for storage of additional agricultural produce and unavailability of quality inputs in time were the most inflicting problems in UP due to which farmers were not getting adequate income from their produce.

www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

न • वाराणसी से प्रकाशित लखनऊ | शनिवार • 26 अक्टूबर • 2013

किसान खेती के साथ पशु पालन पर भी दें ध्यान

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। पशु पालन विभाग के निदेशक डा. रुद्र प्रताप ने कहा कि किसानों को खेती के साथ ही पशु-पालन के क्षेत्र में भी काम करना चाहिए। इससे किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होगी और उनकी माली हालत में सुधार होगा। डा. प्रताप शुक्रवार को रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर में "की 2ग्रीन प्राइवेट लिमिटेड" द्वारा आयोजित तीन दिवसीय एग्रो-फेस्ट तथा किसान-विज्ञान संगम-2013 के उद्घाटन के बाद आयोजित सभा को सम्बोधित कर रहे थे।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। उन्होंने कहा कृषि क्षेत्र प्रदेश के विकास में साकारात्मक योगदान करता आया है। डा. प्रताप ने कहा कि प्रदेश देश के कृषि सकल घरेलू उत्पाद में 13 प्रतिशत का योगदान करता है, जबकि राज्य की दो-तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। उन्होंने कहा कि आलू उत्पादन में प्रदेश का पहला स्थान है तथा सब्जी उत्पादन में दूसरा स्थान है। इसके बावजूद कम कृषि उत्पादकता राज्य में चिंता का विषय है। कार्यक्रम समन्वय डा. एके साह ने कहा कि प्रदेश में किसानों को बेहतर उत्पादन करने के बावजूद अपने कृषि उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है जिस कारण उनकी आर्थिक स्थिति खराब है। कृषि उत्पादों का असंतुलित विपणन, अधिक उत्पादन की स्थिति में अतिरिक्त उत्पादों को शीतगृह-गोदामों में भण्डारन की कमी, कृषि निवेशों का सही गुणवत्ता, मूल्यों एवं समय पर उपलब्ध नहीं होना है। यह समस्याएं यहां के कृषि अर्थव्यवस्था के लिए अभिशाप बनी हुई है।

लखनऊ, शनिवार, 26 अक्टूबर, 2013

परख सच की

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, कानपुर, गोरखपुर, वाराणसी एवं इलाहाबाद से प्रकाशित

तकनीक से दूर किसान नहीं उठा पा रहे लाभ

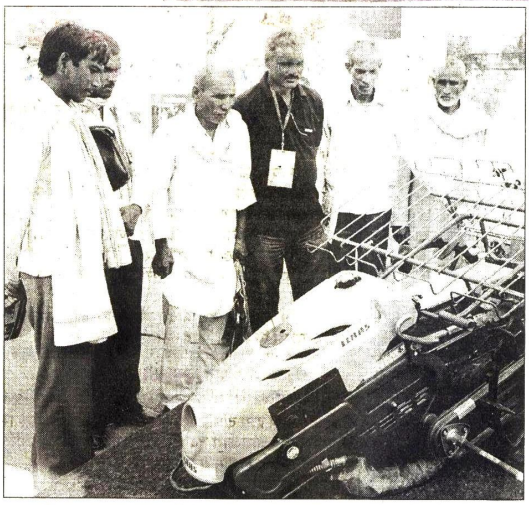

भारतीय गन्ना अनुसधान संस्थान की ओर से एग्री फेस्ट एवं किसान विज्ञान संगम मेले में खरीददारी करते किसान

लखनऊ। सूबे में कृषि उत्पादन को और बेहतर बनाने के लिए अनोखी पहल को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) में एग्री-फेस्ट और किसान-विज्ञान संगम-2013 का आगाज हुआ।

तीन दिवसीय फेस्ट एवं संगम का उद्घाटन पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ.रुद्र प्रताप ने किया। इस अवसर पर डॉ. रूद्र प्रताप ने किसानों को संबोधित करते हुए गन्ना व अन्य फसलों कि खेती के साथ पशु-पालन करने पर जोर दिया और साथ ही साथ प्रदेश सरकार द्वारा पशु-पालन में चलाये जा रहे विभिन्न योजनाओं से रूबरू कराया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या के जीवनयापन का मुख्य जरिया कृषि या खेतीबाड़ी है। खेती के लिए जरूरी प्राकृतिक संसाधनों जैसे उपजाऊ जमीन, सिंचाई हेतु पानी उपलब्धता कराने वाली नदियां, अलग-अलग फसलों के लिए उपयुक्त विभिन्न जलवायु यहां उपलब्ध है। यह राज्य अनेक विविधताओं को समेटे हुए अग्रसर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है जिसमें कृषि अपना सकारात्मक योगदान करता आया है।

डॉ. प्रताप ने कहा कि प्रदेश देश के कृषि सकल घरेलू उत्पाद में 13 प्रतिशत का योगदान करता है तथा राज्य की दो-तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। उत्तर प्रदेश पूरे देश में सबसे अधिक फल एवं आलू उत्पादन करता है और सब्जी उत्पादन में दूसरा स्थान है। इसके बावजूद कम कृषि उत्पादकता राज्य में चिंता का विषय है।

उद्घाटन

नवीन तकनीक से रूबरू हुए प्रदेश भर के किसान

सूबे में सदाबहार हरित क्रान्ति की आवश्यकता

इस मौके पर किसान विज्ञान संगम के समन्वयक डॉ. ए के साह ने कहा कि प्रदेश में किसानों को बेहतर उत्पादन करने के बावजूद अपने कृषि उत्पाद का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है जिसकी वजह से उनकी आर्थिक स्थिति खराब है। कृषि उत्पादों का असंतुलित विपणन, अधिक उत्पादन की स्थिति में अतिरिक्त उत्पादों को शीतगृह,गोदामों में भण्डारण की कमी, कृषि निवेशों का सही गुणवत्ता, मूल्यों एवं समय पर उपलब्ध नहीं होना इत्यादि कुछ ऐसी समस्याएं हैं जो यहां के कृषि अर्थव्यवस्था के लिए अभिशाप बना हुआ है। राज्य के समग्र कृषि विकास में सदाबहार हरित क्रांति की आवश्यकता हर स्तर पर महसूस की जा रही है। इस दिशा में राज्य में स्थापित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारत सरकार की शोध संस्थानें एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों ने विभिन्न फसलों (गन्ना, गेहूं, धान, दलहन, तिलहन, सब्जियों, फूलों इत्यादि), बागवानी, फूलों तथा मवेशी पालन से बेहतर उत्पादन एवं आय के लिए अनेकों-अनेक तकनीकों का विकास किया है। दुर्भाग्यवश सभी तकनीकों का ग्रहण किसानों द्वारा नहीं हो पाया जिस कारण अपेक्षित उत्पादकता की प्राप्ति नहीं हो पायी और उसका वास्तविक लाभ किसानों को नहीं मिल पाया।

डॉ. साह ने बताया कि इस अवसर पर भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान से विकसित तकनीकों जैसे शीघ्र पकने वाली तथा उच्च शर्करा युक्त प्रजाति कोलख 94184, गन्ना बीज मात्रा को कम करने के लिए तथा प्रति ईकाई क्षेत्रफल में अधिक पौध संख्या के लिए केन-नोड तकनीक,उपज एवं मृदा स्वास्थ्य को टिकाऊ रखने के लिए कार्बनिक विधी से गन्ना खेती, सिंचाई जल बचत करने की तकनीक, गन्ना मशीनें (बुआई, पेड़ी प्रबंधन व गन्ना कटाई यंत्र), जैव अधारित नाशी कीटों एवं बिमारी प्रबंधन तकनीकों पर किसानों को विस्तृत जानकारी दी गई। **वर्स.**

एग्री-फेस्ट व किसान-विज्ञान संगम शुरू

समग्र कृषि व ग्रामीण विकास के लिए खेती व पशुपालन का समायोजन आवश्यक

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या की रोजी-रोटी व जीवनयापन का मुख्य जरिया कृषि या खेती-बाड़ी है। खेती के लिए जरूरी प्राकृतिक संसाधनों जैसे-उपजाऊ जमीन, सिंचाई हेतु पानी की उपलब्धता कराने वाली नदियां, अलग-अलग फसलों के लिए उपयुक्त विभिन्न जलवायु यहां उपलब्ध है। यह राज्य अनेक विविधताओं को समेटे हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है जिसमें कृषि अपना साकारात्मक योगदान करती आयी है।

एग्री फेस्ट का फीता काटकर उद्घाटन करते पशुपालन निदेशक डॉ. रुद्र प्रताप

यह बात पशुपालन निदेशक डा. रुद्र प्रताप ने किसानों को संबोधित करते हुए कही। वह प्रदेश में कृषि उत्पादन को और बेहतर बनाने के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर में आयोजित एग्री-फेस्ट तथा किसान-विज्ञान संगम-2013 के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे। तीन दिनों तक होने वाले फेस्ट एवं संगम का आयोजन 'की 2 ग्रीन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली' और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा किसानों के लिए चलायी जा रही कृषि पशुपालन योजनाओं के बारे विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश देश के कृषि सकल घरेलू उत्पाद में तेरह प्रतिशत का योगदान करता है तथा राज्य की दो-तिहाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। उत्तर प्रदेश पूरे देश में सबसे अधिक फल एवं आलू उत्पादन करता है तथा सब्जी उत्पादन में दूसरा स्थान है। इसके बावजूद कम कृषि उत्पादकता राज्य में चिंता का विषय है । डा. एके साह समन्वयक किसान विज्ञान संगम ने कहा कि राज्य के समग्र कृषि विकास में सदाबहार हरित क्रांति की आवश्यकता हर स्तर पर महसूस की जा रही है। इस दिशा में राज्य में स्थापित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, भारत सरकार के शोध संस्थान एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों ने विभिन्न फसलों (गन्ना, गेहूं, धान, दलहन, तिलहन, सब्जियों, फलों इत्यादि), बागवानी, फूलों तथा मवेशी पालन से बेहतर उत्पादन एवं आय के लिए अनेकों तकनीकों का विकास किया है।

इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों से कृषि विभाग, कृषि शोध संस्थाओं, गन्ना विकास विभाग, कृषि निवेश निर्माताओं तथा चीनी मिलों के अधिकारी भाग ले रहे हैं। एग्री-फेस्ट में ताइवान, जापान, लीबिया, बेल्जियम के कृषि कम्पनियों सहित देश के कृषि यंत्र निर्माता, कृषि प्रसंस्करण के लिए औजार व अन्य उत्पाद बनाने वाली कम्पनियां, ग्रामीण बैंक,नाबार्ड, जैन इरीगेशन तथा अन्य प्राइवेट एजेन्सियों ने उत्पाद प्रदर्शित किये हैं। इस मौके पर किसान विज्ञान संगम के संयोजक डा. एके साह, डा. किदवई, वसीम खान, इरशाद आदि ने भी किसानों को सम्बोधित किया।

- फल और आलू उत्पादन में देश में उप्र का पहला स्थान
- देश के सकल घरेलू कृषि उत्पादों में उप्र का तेरह प्रतिशत योगदान
- देश-विदेश की कृषि कम्पानियों ने प्रदर्शित किये अपने उत्पाद

लखनऊ • शनिवार • 26 अक्तूबर 2013 हिन्दुस्तान

पशुपालन से सुधरेगी किसानों की दशा

लखनऊ। पशुपालन निदेशक डॉ. रुद्र प्रताप ने शुक्रवार को कहा कि किसान अगर खेती के साथ पशुपालन भी करें तो उनकी आर्थिक स्थिति सुधर सकती है। पशुपालन निदेशक भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में तीन दिवसीय 'एग्री-फेस्ट एवं किसान विज्ञान संगम-2013' के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। **प्रसं**